Regarding measures taken by India to maintain the political stability in South Asia in the last few years

श्री मनीश तिवारी **(**चंडीगढ़**) :** अध्यक्ष महोदय, मैं इसलिए इस विषय को उठा रहा हूं, क्योंकि विदेश मंत्री जी को दोपहर में इसके ऊपर बयान देना है । हमारी जो चिंताएं हैं, उनको भी अपने संज्ञान में ले लेंगे, जब वह बयान देंगे । मैं दो-तीन बातें आपके समक्ष रखना चाहता हूं ।

अध्यक्ष जी, बांग्लादेश से भारत का एक विशेष रिश्ता रहा है । वर्ष 1971 में बांग्लादेश की संरचना में भारत ने एक विशेष भूमिका निभाई थी, जिससे जो दक्षिण एशिया का भगौलिक मैप है, वह वर्ष 1947 के बाद एक बार फिर से बदला था । जो परिस्थितियाँ बांग्लादेश में आज की तारीख में उत्पन्न हैं, वह बहुत ही संवेदनशील हैं और बहुत चिंताजनक हैं ।

जनवरी, 2024 में शेख हसीना जी के नेतृत्व में आवामी लीग की चौथी बार सरकार बनी थी । लगभग 6 महीने के बाद ही एक ऐसी परिस्थिति वहां पर उत्पन्न हुई कि एक आंदोलन हुआ । उस आंदोलन के कारण सरकार को इस्तीफा देना पड़ा और शेख हसीना जी को वह मुल्क भी छोड़ना पड़ा ।

अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से सरकार के संज्ञान में यह बात लाना चाहता हूं कि सिर्फ बांग्लादेश ही नहीं है, पिछले तीन-चार वर्षों में दक्षिण एशिया के कई ऐसे मुल्क हैं, जहां पर राजनीतिक अस्थिरता काबिज रही है, चाहे म्यांमार हो, चाहे श्रीलंका हो, चाहे मालदीव हो और पाकिस्तान में भी जो फौज का वर्चस्व है, वह सिविलियन सरकार के ऊपर बढ़ता जा रहा है । चीन का हस्तक्षेप भी वेस्टर्न इंडियन ओसियन में पिछले कई वर्षों में बढ़ा है । भारत दक्षिण एशिया का सबसे प्रमुख मुल्क है । अगर दक्षिण एशिया में अस्थिरता होती है तो उसका सीधा-सीधा असर भारत पर पड़ता है और सबसे ज्यादा प्रभाव भारत पर पड़ता है ।

मैं सरकार से जानना चाहूंगा, जब विदेश मंत्री जवाब देंगे तब बतायें कि पिछले कुछ वर्षों में दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता को बहाल रखने के लिए भारत सरकार की तरफ से क्या कदम उठाए गए हैं? अगर यह राजनीतिक अस्थिरता इसी तरह फैलती रही तो इसके जो नकारात्मक प्रभाव हैं, वे भारत के ऊपर क्या पड़ने वाले हैं? यह मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूं । ?(व्यवधान)

श्री अतुल गर्ग **(**गाजियाबाद**) :** आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपका ध्यान और सदन का ध्यान एक बहुत मार्मिक विषय की तरफ ले जाना चाहता हूं । ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष **:** माननीय सदस्यगण, सदन में आप वरिष्ठ सदस्य हैं । लाखों वोटों से आपको जनता जिताकर भेजती है । आप सब जानते हैं कि इस तरीके से बहस करने से न तो कुछ रिकार्ड में जा रहा है और न इस तरीके की चर्चा करनी चाहिए । वरिष्ठ सदस्य को विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि वे आपस में डिबेट, चर्चा न करें, तो वह उचित रहेगा । नहीं तो वे अपनी प्रतिष्ठा खुद गिरा रहे हैं । मुझे इसमें कुछ नहीं कहना ।

? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष **:** अतुल गर्ग जी, आप बोलिए ।

? (व्यवधान)